निरुत्तर है कविता

अनन्त मिश्र

अनंत मिश्र का यह चौथा संकलन 'निरुत्तर है कविता' एक बार फिर जरा और शिद्दत से तस्दीक करता है कि उनकी कविताएँ रागदीप्त जीवन संवेदना की विरल कविताएं हैं। मनुष्य के सहज जीवन को बाधित करने वाली बाजारू सभ्यता के कृत्रिम उपादानों को अपदस्थ करने के लिए अनवरत सक्रिय उनकी कविता जीवन राग के तंतुओं से बुनी गई है। यह बुनावट इतनी बारीक कलात्मक पच्चीकारी की नहीं है कि उसमें जीवन-द्रव्य ही गायब हो जाता हो। अनन्त जी के पहले कविता संग्रह पर लिखते हुए प्रख्यात कवि और आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने लिखा था "अनंत मिश्र का कविता-संग्रह बहुत विलम्ब से पाठको के पास पहुंच रहा है, इसका मुख्य कारण यही है कि वे छपास रोग और इतिहस्त प्रवेश की लालसा से युक्त एक शुद्ध कवि हैं। जो कविता लिखकर ही मुक्त भी हो जाते हैं और तृप्त भी। उनकी कविता से कोई कौन सा हित साधन कर लेगा या उन्हें कवियों के किसत खांचे से डाल देगा, इसकी चिन्ता उन्हें नहीं।" तिवारी जी की यह टिप्पणी दो दशकों बाद आज भी कवि स्वभाव के बारे में उतनी ही सच है। मिश्र जी की कविताएं आश्वस्त करती हैं कि वे सब कुछ खोने छोड़ने को प्रस्तुत हैं यदि यह तय हो जाय कि दुनिया के सभी प्राणियों के स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए उनकी भूख की समरूप हल कर ली गयी है। उनकी चिन्ता में मनुष्य के साथ शेष सृष्टि भी समान घनत्व में बसी हुई है इसलिए वे मनुष्य की प्रकृति और प्रकृति के दुर्लभ दृश्य विधान को प्रत्यक्ष करने में समर्थ हैं। उनके सहज निरभिमानी और निश्छल जीवन-राग से निकलने वाली कविताओं में वसंत की पुनर्वता का आमंत्रण भी है पतझड़ का बीत राग भी शीत की ठिठुरन भी और सभी जीवों पर पड़ने वाले उनके प्रभाव भी वे अपनी गली-मुहल्ले से लेकर विश्व की जटिल परिस्थितियों पर भी बेबाक नजर रखने वाले कवि हैं। वे स्त्री, बच्चों बूढ़ों और बेजुबानों के सुख-दुख जिल्लत जलालत को महसूस करने वाले और उससे निजात दिलाने की कोशिश में लगे हुए प्रेममय जीवन-संवेदना के गहरे बोध के कवि हैं।

—चित्तरंजन मिश्र

निरुत्तर है कविता

निरुत्तर है कविता

अनन्त मिश्र

यश पब्लिकेशंस
नई दिल्ली, भारत

ISBN : 978-93-85696-34-3

प्रथम संस्करण : 2021

© अनन्त मिश्र

मूल्य : ₹ 299/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नलिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
4754/23, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

संपर्क : 011-40018100
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
बेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at :Amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

समर्पण

पौत्र अचिन्त्य, अमात्र

पौत्री काश्यपी, दौहित्री आयुषी

दौहित्र अमोघ, सत्यम्, दिव्यम्

के लिए

अनुक्रम

अभिनन्दन	11
गठरी	12
दुःख को बचाना है	13
उम्मीद	15
यथावत्	16
छवि	18
कैसे बचेंगे	19
आदतें	20
कूड़ेवाला	21
कविता में हर बात मुश्किल है	23
प्रेम कहानी	24
छः छोटी कविताएँ	25
बूढ़ा रन आउट हो सकता है	27
हत्यारे	29
टहलने वाले	31
डिजिटल	33
ख़ेद है	35
चकित करता है सुबह टहलना	38
बच्चों को इसलिए करता हूँ प्यार	40

सेल्फ़ी ले लें 41
आप के साथ मेरी सीमाएँ 42
कठिन है 44
जिम्मेदारी 45
उत्तर जरूरी नहीं है 46
एकान्त की तलाश में 48
तुम्हारे चाहने के बावजूद 49
विद्वान लोगों की बात 51
शाम एक ऐसी भी 52
लौट आओ मेरे बेटे! 53
सांड़ और दीवाली 55
दाँत निकलवाने के बाद 57
क्या कोई करेगा ऐसा भी 'सुसाइड' 59
हिन्दी दिवस 60
छोटी-छोटी बातें 61
सत्य 62
बचपन में बहन की मृत्यु 64
दुख को सुरती की तरह थूक दो 65
भाग्य में : आम आदमी के 67
मेरा जैकेट 69
बाढ़ में मंत्री 72
दीपावली 74
बुढ़िया के मरने की प्रतीक्षा 75
बहुत दिनों बाद मिलने पर 76
एक और दीपावली 77

मिल गईं मुझे एक साथ कई डायरियाँ 78
साक्षी होकर रह जाँय 81
पूर्णता के विषय में 82
चैत कथन 83
तारीख दे दो 84
वृद्ध की मृत्यु के बाद 86
कविता में व्याकरण 87
एक ग़ज़ल 88
गैरबराबरी 89
शाम की उदासी 90
आज की बड़ी कविता 91
कुम्हड़ा एक निरीह प्राणी की तरह है 93
सदी का दरवाजा खुल गया 95
आदमी निरुत्तर है 96
रात आई है 97
मैं भी एक पिल्ला हूँ 99
अमृत और भूख 100
मुहावरे में 101
निर्विकल्प 102
सफल लोगों के प्रति असफल वक्तव्य 104
सावधान बच्चों! 106
डर 107
आने वाले समय में चिन्ता का विषय 109
अच्छी कविता 110
शाम 112

कार में करैली 113
शानदार आदमी 116
प्रतीक्षा 117
मैं गधा हूँ 119
यही जीवन है 121
नमस्कार 122

अभिनन्दन

अभाव नहीं
स्वभाव कष्ट देता है
स्वभाव संतुलित करने के लिए
भाव अवलम्बन है,
जगत् जैसा भी है,
उसका अभिनन्दन है।

गठरी

नींद में भी लिए रहता है
हर आदमी
एक गठरी
वह मिलता है
तो गठरी
छिपाये रहता है,
गो, सम्वेदनशील लोग देख लेते हैं
गठरी लिए वह भवसागर पार करना चाहता है
नाँव खोजता है
नाँव मिलती नहीं
वह मरता नहीं
अपनी गठरी के कारण
जीते जी डूब जाता है।

दुःख को बचाना है

बचा रहे दुःख
तो बची रहेगी
कविताएँ
प्यार बचे न बचे
दुःख को बचाये रखना है
सुख ही सुख रहेगा
तो ऊब होगी
ऊब से नहीं बनेंगी
अच्छी कविताएँ
ओछी कविताओं का
बचा रहना
दुनिया के लिए
खतरनाक है
इसलिए बचा रहना चाहिए
हर हाल में
आदमी का दुःख
जन्म और मरण
दोनों दुख की सन्तान हैं
यहाँ तक मुक्त हंसी भी
दुःख झेलने के बाद ही
आती है,
एक बीज जब पूरी तरह

टूट जाता है
मिट्टी में मिल जाता है
तभी वृक्ष बनता है
अब कितनी बार
कविगण दुहरायें
दुःख बचा रहना चाहिए,
सुख नहीं बचता
तो न बचे।

उम्मीद

एक उम्मीद बनी रहती है
एक फूल कहीं खिलता है
एक पौधा हरा रहता है
खत्म होती नहीं कभी दुनिया
गो कि हर रोज़ मरा करती है
एक आशिक का दिल भले टूटे
कई आशिक रोज़ होते है,
बेवफाई भी रहा करती है
बावफाई भी रहा करती है
सैकड़ों बार हार जाते हैं
जीत जाने का जज्बा रहता है।
कोई बीमार भले हो
ठीक होने का सबब रहता है।
जब से दुनिया है और जबतक है
फलसफा यही रहा करता है।

यथावत्

नींद से जगा दिये जा रहे बच्चे
ताकि स्कूल जाँय
भोज से भगा दिये जा रहे कुत्ते
ताकि भद्रजन निर्विघ्न भोजन कर सकें
औरतें ओठों पर लाल-पीला, हरा-नीला
रंग पोत रही हैं।
ताकि उनकी मुस्कान खूबसूरत लगे
गेट पर मुस्तैद हैं चौकीदार
ताकि बड़े लोगों के लिए
खोले, बन्द करे
ट्रेन की जनरल बोगी में
सवार होने के लिए
पुलिस द्वारा पिट रहे हैं
मजदूर, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली
जिन्हें कमाने जाना है,
खेत में जांगर पेर रहे हैं श्रमिक
ताकि बिना कुछ श्रम के धनी हुए लोग
खाना खरीद सकें,
पोस्टमैन दौड़ रहा है सायकिल पर
इस घर से उस घर
ऐन जेठ की दुपहरी में
ताकि प्रेमिकाओं, प्रेमियों के पत्र

या जरूरी डाक
पतों पर पहुँच जाँय।
नालियाँ साफ कर रहे हैं गरीब
नव जवान
ताकि घनी नवजवान
अपने टायलेट में आराम से
उत्सर्जन करें
चाहें तो सिगरेट पियें
चाहें तो पढ़ें अखबार
झुग्गियों में रहने वाले लोगों
की लुगाइयाँ
फ्लैटों की मकानमालिकिनियों के लिए
झाड़ू-बरतन-पोंछा कर रही हैं
थोड़े से पैसों के लिए
और डाँट भी खा रही हैं
और किसान खेत खोकर
मुवावजे के बदले
चमचमाती सड़क पा गया है।
विकास और सभ्यता का अश्वमेध यज्ञ
चल रहा है
ओर सिंहासन चमक रहा है
नेता जुगाली कर रहे हैं शब्दों की।
वोट के बदले,
बाँट रहे हैं थोड़ा-थोड़ा पैसा कि
वे अगले चुनाव तक कम से कम जीवित रहें,
खेल चल रहा है।
वैसे भी पुरखे कहते थे कि
सब ईश्वर की लीला है
एक बहुवचन जोड़ता हूँ
सब ईश्वरों की लीला है।

छवि

वे अपनी छवि
बनाने के चक्कर में लगे हैं
मैं समझ गया एक दिन
कि छवि बनाने का चक्कर
अपने को नष्ट करने का उद्यम है,
दुनिया में बहुत से लोग
इसी में लगे हैं
इसीलिए दुनिया
उतनी खूबसूरत
नहीं बन पा रही है
जितनी उसे होनी चाहिए।

कैसे बचेंगे

तूफान से तो बच गये
अब प्यार से कैसे बचेंगे।
बच गये हम गोलियों से
तेग से तलवार से
बच गये हम आँसुओं से
धार से कैसे बचेंगे।
एक उजली आँख
काली रात पर भारी
एक मीठी याद
सारी नींद पर भारी
रात से हम बच गये
पर याद से कैसे बचेंगे।
ज़िन्दगी भर प्यार करना
और उसमें डूब जाना
कुछ छिपाना, कुछ बताना
और फिर जीना जमाना
झंझटों से बच गये
पर समय से कैसे बचेंगे?

आदतें

खत्म नहीं होती
आदमी खत्म हो जाता है
खैनी, पान, तम्बाकू
शराब, जवान स्त्रियों को देखना
पैसे के जुगाड़ में रहना
और संगीत से प्रेम करना
चिड़ियों, पेड़ों को ध्यान से देखना
कुछ खत्म नहीं होता
सब चलता है
जबतक जीवन चलता है,
लोग कहा करते हैं
ईश्वर को याद करने का समय है
चौथे चरण में
पर आदमी दूसरे चरण में
रहना चाहता है
आदमी क्या करे
न वह अपनी इच्छा से
आया, न जायेगा,
वह अपनी आदतों का
गुणनफल बना रहता है।

कूड़ेवाला

वैसे तो सारी धरती के कूड़े
उसे उठाने थे
फिलहाल मोहल्ले के कुछ घरों का
कूड़ा बोरे में भरकर
उसे ले जाता है,
भद्रजन जीते हैं
तो सबसे ज्यादा कूड़ा करते हैं
कूड़े वाले से ज्यादा इस बात को
कोई नहीं जानता,
जो जितना बड़ा नेता
अफसर
वर्दीधारी
व्यापारी
वह उतना ही ज्यादा कूड़ा पैदा करता है
कभी शब्दों से
कभी कर्म से
और जनता को कूड़ा उठाना पड़ता है,
कुछ लोगों ने
तो जन्म ही लिया
कूड़ा पैदा करने के लिए
गो, कभी-कभी कूड़े भी
कुछ काम के हो सकते हैं,

आखिर कूड़ा कहीं से उठे
कहीं जाय
पर रहना तो उसे धरती में
समुद्र में, आकाश में ही है
कमाई किसी की हो
पर जिससे होनी है कमाई
वह तो वही जांगर पेरने वाला
आदमी होगा,
जितनी बढ़ती जाती है
देश-विदेश की
जी.डी.पी.
उसी अनुपात में पैदा होता है कूड़ा
गो कविता कूड़ेवाले पर थी
पर कविता को भी तो स्वतंत्रता है
कूड़ा होने की।

कविता में हर बात मुश्किल है

बहुत मुश्किल है छोटी सी बात
इतनी सी कि मुझे भूख लगी है
प्यास लगी है
प्यार में इंतजार है किसी का
घर उदास है शाम को
जेब में पैसा नहीं है
सब्जी खरीदने के लिए
कहीं जाना जरूरी है
रिक्से का पैसा नहीं है
वगैरह-वगैरह
कुछ भी वगैरह
वशर्ते उन्हें कविता में
कहना हो।

प्रेम कहानी

पुरुषों को याद आती है स्त्रियाँ
स्त्रियों को याद करते हैं पुरुष
दोनों रोमैन्टिक हो जाते हैं
सुनने या गाने लगते हैं
प्रेम के गीत
पर जब दोनों बार-बार मिलते हैं
तो हो जाता है प्रायः वैराग्य
राग क्षीण हो जाता है
खुशी गायब हो जाती है
एक संघर्ष रह जाता है
दोनों के बीच।
कहानी लम्बी नहीं है
पर छोटी कहानी भी
सच कहती है
कोई सुने न सुने
कहानी पड़ी रहती है
कोई कभी आयेगा
सुनेगा यह कहानी
और विचारेगा
कि यही है स्त्रियों-पुरुषों की
महान् कहानी।

छः छोटी कविताएँ

एक
घोंसला तो बन चुका था
चिड़िया नहीं थी

दो
आखें बड़ी थीं
सुन्दर थीं
पानी नहीं था।

तीन
भेद खुल गया था
पर भेद नहीं जानता था
यही होना था

चार
झूठ के पाँव नहीं होते
सब जानते थे
पर सच के पाँव भी नहीं होते
कम लोग जानते थे।

पाँच
मुहब्बत भी

मुहब्बत है
मुहब्बत मौत तक रहेगी,
गो बोलचाल बंद है।

छः
अपने लिए कुछ मांगना ही नहीं है
पर अपनों के विस्तार ने
भिखारी बना दिया।

बूढ़ा रन आउट हो सकता है

झट से उठने का मन नहीं है
क्योंकि इतनी कोई जल्दी नहीं है
एक समय आता है
जब जल्दी शब्द व्यर्थ हो जाता है,
धीरे-धीरे अन्दर-अन्दर उद्योग क्या
कुटीर उद्योग काम करता है कि
जीने के विरूद्ध जो है
उससे कैसे निपटा जाय,
बैठे रहना
पढ़ना और लिखना
मजबूरी में लिए गए
मन के निर्णय हैं
क्योंकि जो मजबूर नहीं हैं
वे दौड़ रहे हैं
किसी न किसी वासना को पूरा करने के लिए।
एक उम्रदराज आदमी
वासना में हो सकता है
पर
वह दौड़ नहीं सकता
झट से उठकर दौड़ना

रन बनाने वाले क्रिकेटियर का काम है
विकटों के बीच
अर्थात् जन्म-मृत्यु के बीच
जल्दी रन बनाने की कोशिश में
बूढ़ा रन आउट हो सकता है।

हत्यारे

टहलते हुए आ रहा था
एक आदमी सड़के किनारे पेड़ की
डालियाँ काट रहा था,
मेरा तो कुछ भीतर से घायल हो रहा था,
वह अत्यन्त प्रसन्न था कि
वह अपना काटने का काम
बखूबी कर रहा था,
कई बार गुजरा हूँ कसाइयों की दुकानों के
सामने से
वे लटकाये रहते हैं
गला रेतकर उलटा बकरा
और चमड़ियाँ उतारते रहते हैं,
साथ-साथ हाँक भी लगाते हैं
आइये, आइये
ताजा है गोश्त।
मैं गुजरता हूँ सड़क पर
तो गाड़ियों में भेजे जाते हैं
पशु और मुर्गे
मुर्गियाँ और बकरियाँ-बकरे
बूढ़ी गायें, बछड़े,
उनका क्या होगा,
जानकर दुःखी होता हूँ

अब क्या कहूँ
हत्यारे कविताओं पर भारी हैं
और मेरा मन
मुझ पर भारी हो रहा है।

टहलने वाले

फिर से उसी समाज में लौटते हैं रोज़ लोग
चिढ़ते हैं जिस समाज से रहते उसी में लोग,
फिर से वही औरत वही बच्चे वही दुनिया,
जिससे निजात पाने की कोशिश में लगे लोग।
यह देश बहुत भ्रष्ट है, सरकार भ्रष्ट है
लाचार उसी देश में रहते हैं सभी लोग
कुछ-इश्क की कुछ हुश्न की कुछ देश-कोस की
बातें बता दिलचस्पियाँ ले लौटते हैं लोग।

बच्चों से

बच्चों से
बच्चों! तुम भागों इस दुनिया से
जिस दुनिया में खिलौने कम
हथियार ज्यादा बनते हैं
हवाएँ कम बहती हैं
और अफवाहें ज्यादा
बच्चों! कोई ऐसी जगह खोजो
इस दुनिया में यदि कहीं हो
जहाँ तुम खेल सको
और तुम्हें विवश न किया जाय
कि तुम्हें कुछ बनना है
कुछ कर दिखाना है,
तुम्हारे पिता

और तुम्हारे बाबा तो
पहले ही इसी काम में
अधमरे हो गये
क्या तुम भी अधमरे होना चाहते हो?

डिजिटल

सब डिजिटल हो रहा है
आत्मा के डिजिटल होने में
अभी देरी है,
हवा को हवा की तरह नहीं
उसकी गति और तत्त्वात्मकता में
फूलों को उनके सौरभ रंग में नहीं
उनकी पंखड़ियों के हिसाब-किताब में
माँ को माँ की तरह नहीं
उसके देह के गणित
और उसके प्रोफाइल में
पिता को पिता की तरह नहीं
उसकी इनकमटैक्स की फाइल में
ज्ञान को, ज्ञान में नहीं
उसके 'बायोडाटा' में
आदमी को आदमी की तरह नहीं
उसके मेल आई0डी0
आधार कार्ड, पैन नम्बर
फोन नम्बर में
जानने महसूस करने का नाम है
नया संसार
ईश्वर का पता
लगाने में बहुत वक्त गुजर गया है

अभी तक उसका फोन नम्बर
किसी को नहीं मिला।
देखते जाइये
दुनिया डिजिटल हो रही है
ज़िन्दगी डिजिटल हो
शायद।
डिजिटल रहिए
नहीं तो शांति भंग करने की
आशंका में
आपको पुलिस गिरफ्तार कर सकती है।

ख़ेद है

वह जो नहीं लिख पाता
जो जीवन भर लिखना चाहता था
हर कविता लिखने के बाद
स्वयं पढ़ता हूँ
वह जो अस्पष्ट धुँधला
निःशब्द शब्द होने के लिए बेचैन
वर्षों-वर्षों से मेरे भीतर है
और वह इबारत
जो नहीं लिख पाता
वह क्या है
जो आत्मा में रंगा रहता है
जैसे कोई रहस्य
निगूढ़
जो भाषा के बाहर हो
वही तो
वही लिखना चाहता हूँ
किन्तु कोई न कोई उसका आकार है
न वह सर्वथा निराकर है
न सुन्दर
न असुन्दर
न अच्छा
न बुरा

वह अन्दरूनी जीवन
जिसका बिम्ब है
यह बाहरी जीवन
वह नहीं है,
और उसे नहीं लिख पाता
प्रतिभा के उत्कर्षों में भी
जिसको आकार नहीं दे पाता
उसके विकल्प में
इतनी कविताएँ
कि
संग्रह पर संग्रह छप रहे हैं
और वह एक कविता
इस जनम में नहीं लिखी जा रही हैं
क्या पता
अगला जन्म हो न हो
या ऐसी कोई व्यवस्था भी न हो
इस महाप्रकृति में,
इसलिए
वह कविता जो नहीं लिखी गई
उसका खेद
मेरा गहरा खेद है
और खेद के लिए
प्रार्थना, क्षमा
या प्रतीक्षा,
या चुप्पी
या आँखों में विस्मय-विवशता
भाषा की अयोग्यता
और अपनी असमर्थता
जो चाहो कहो

पर वह कविता न लिखने का
मुझे खेद है
शायद अधिक खेद से ज्यादा
कि शेष जो लिखूँगा
वह भी इस खेद को
खत्म नहीं करेगा।

चकित करता है सुबह टहलना

सुबह-सुबह चिड़िया,
धरती पर धीरे-धीरे चलना,
कभी-कभी कीड़ों को देखना
और उन्हें दबने से बचाना,
सुबह-सुबह दूब, वनस्पतियाँ
पेड़ भटकते कुत्ते
और आवारा सांड़
वाहनों का आना-जाना
गायों का यहाँ वहाँ गोबर करना
सुबह-सुबह पुराने बूढ़े
ताजा औरतें
और देह में जवानी की ठसक लिए जवान
देह का भूगोल ठीक करने निकली नवयुवतियाँ
कुछ मरियल से किसान
रोज़ी खोजते
गँदले मजदूर
सुबह टहलने में
हवा का स्पर्श ही नहीं
प्रभात कालीन अनुभव
चकित करता है

चकित करता है मेरे मोहल्ले का
नवजवान नंग धड़ंग पगला
वैसे अपना होना भी
हमेशा चकित करता रहेगा
मरने तक।

बच्चों को इसलिए करता हूँ प्यार

जो अच्छे थे चले गये
जो बचे हैं खराब हैं
बूढ़ों का बयान है,
जो हो रहा है, अच्छा है
जो हैं, वे अच्छे हैं।
जो चले गये, वे मूर्ख थे
नवजवानों का बयान है,
बच्चे केवल खेल रहे हैं
वे कोई बयान नहीं देते
इसीलिए बच्चे हैं
मैं इसीलिए उनसे
बेदह प्यार करता हूँ।

सेल्फ़ी ले लें

आफत आये
आग लगे
या कोई बच्चा
मोटर के नीचे आ जाये
सेल्फी ले लें,
कोई अबला
चीख रही हो
गुंडे उसको तहस-नहसकर
लूट रहे हों
सेल्फी ले लें।
बच्चे भीख मांगते हों
स्टेशन पर
तड़प रहा हो कोई
अपने चरम कष्ट में
कहीं नदी उफनाई हो
या कोई उसमें डूब रहा हो
सेल्फी ले लें।

आप के साथ मेरी सीमाएँ

मुस्कराते रहना
दो प्रकार का हो सकता है
कि एक आदत हो
या एक शरारत हो
अब आप क्यों मुस्करा रहे हैं
हाँ हंसने का अवसर आता तो
खुलकर हंसते
यह बात तो समझ में आ सकती थी
पर आप की यह आदत
समझ में नहीं आती,
हो सकता है कि आप ने
सफलता मिलाने वाली
किताबें पढ़ ली हों
हो सकता है कि
आप दूसरों को इतना छोटा मानते हों कि
आप उन्हें देखकर सिर्फ मुस्करा सकते हैं,
हो सकता है कि आप अपना दुःख,
किसी से नहीं कहना चाहते हों,
हो सकता है कि आप को
बताया गया हो कि
मुस्कराते रहने से सेहत
और चेहरे की सुन्दरता दोनों

ठीक रहती है
बहरहाल आप के इस आचरण
के आइने में
मैं अपना चेहरा देख रहा हूँ
बाहरी और भीतरी चेहरा
और कुछ भी समझ नहीं रहा हूँ
मेरी सीमाएँ।

कठिन है

बड़ा कठिन है
अपना होना
और अपने को सहना
दूसरों का होना
हमारे वश में नहीं
सबसे ज्यादा कठिन है
एक आदमी की ज़िन्दगी में
एक आत्मा का होना
जो बराबर अन्दर से
बोलता है
विवेक
पैदा करता है
जो सुख में बाधा है
अब आदमी तो कुछ कर नहीं सकता
उस आत्मा का
जो परमात्मा की तरह
आदमी की छाती पर सवार है
अहर्निश।

जिम्मेदारी

संसार अनित्य नहीं
हम अनित्य हैं
पर संसार को अनित्य कहते हैं,
समय खराब नहीं
हम खराब हैं
समय को हम खराब कहते हैं,
जमाने का दोष नहीं
दोषी हम हैं
और जमाने को दोष देते हैं
प्रेम बेवफा नहीं
हम बेवफा हैं
प्रेम को बेवफा कहते हैं,
दूसरा कैसे जिम्मेदार हो सकता है
हमारे रहते
हमारे अलावा।

उत्तर जरूरी नहीं है

थोड़ा-थोड़ा कलेजा निकालती हैं
कविताएँ
पूरा निकाल लेतीं एक ही बार
तो कवि मर जाता,
थोड़ा-थोड़ा निकालती हैं
प्रेमिकाएँ, कलेजा
एक ही बार निकाल लेतीं
जो प्रेमी मर जाते।
थोड़ा-थोड़ा कलेजा
निकालती है दुनिया
हर आदमी का कलेजा
एक ही बार निकाल लेती
तो आदमी मर जाता
थोड़ा-थोड़ा कलेजा
निकालते है लोग लोगों का कलेजा
उनका ईश्वर
एक ही बार निकाल लेता
तो ईश्वर मर जाता।
बात
कविता
प्रेमिका
दुनिया

और ईश्वर की उतनी नहीं
जितनी आदमी की है
उसी का हर बार
निकाला जाता है कलेजा
आदमी का कलेजा
निकालने में
क्या मजा आता है
निकालने वालों को।

एकान्त की तलाश में

एकान्त की खोज में
गया था
वह वहाँ नहीं था
दीवारें थीं
सामान थे
मसलन मेज
कुर्सियाँ वेड,
कमरा
कुछ और चीजें थीं
सबकी भाषा थी
मैं भाषा के बाहर
सन्नाटे की खोज में गया था,
वहाँ भी थे मेरे कुछ विचार
चाहे वे सन्नाटे की खोज में ही थे
पर थे
मैं अकेला नहीं हो पाया
दुनिया में अकेला होना
एक मुश्किल इच्छा है
जो पूरी नहीं होती।

तुम्हारे चाहने के बावजूद

तुम नहीं चाहते थे
कि दाँत झर जायँ
पर झर गये
तुम नहीं चाहते थे कि
गालों में झुर्रियाँ पड़ जायँ
पड़ गईं
तुम नहीं चाहते थे
आँखों की रोशनी कम हो जाय
हो गयी।
तुम नहीं चाहते थे
कि खर्च बढ़ जाय
बढ़ गया,
तुम नहीं चाहते थे कि
दिल भर जाय
पर भर गया
तुम नहीं चाहते थे
जायदाद बिक जाय
बिक गयी
तुम नहीं चाहते थे
बहुत कुछ वगैरह-वगैरह
पर तुम्हारे न चाहने के बावजूद
वह सब घटित होते गये

अब चुप रहो
कुछ नहीं बोलो
कहीं ऐसा न हो कि
शब्दों के अर्थ सत्य हो जायँ
तुम्हारे न चाहने के बावजूद।

विद्वान लोगों की बात

ये विद्वान लोग
क्या बोलते हैं
क्या बोल रहे हैं
बूढ़ा चपरासी
कभी वहाँ ठिठक जाता है
आते-जाते
सुन लेता है कुछ
जो वे बोलते हैं
विद्वान लोग
जो बोल रहे हैं
वह मैं समझता हूँ
उतना ही जितना मैं होता हूँ
उन्हीं की तरह विद्वान
एकान्त में
उस बूढ़े चपरासी के साथ
जब मैं बैठ जाता हूँ कहीं
तो मुझे बिल्कुल नहीं लगता
कि विद्वान कुछ बोलते हैं
जिसे कोई नहीं सुनता
बिना कुछ विद्वान हुए।

शाम एक ऐसी भी

शाम एक ऐसी भी आई
दिनभर की बदली के बाद
कि सिर्फ बूँदों की टपक में
सन्नाटे की संधि में बजती
धीरे-धीरे रात में बदलती
ऐसी अपूर्व सन्नाटे की शाम
कि कोई याद भी नहीं आता
न अपना, न पराया
न कोई दोस्त, न दुश्मन
एक अजीब काली गुफा जैसी शाम
न भूता, न भविष्या
मित्रों, यदि तुम कहीं हो
तो तुम डरो ऐसी शामों से
जैसे मैं डर रहा हूँ
सृष्टि की अकेली यह शाम
भाद्रपद चतुर्दशी सम्वत् 2062।

लौट आओ मेरे बेटे!

लौट आओ मेरे बेटे
जहाँ तुम हो वहाँ कुछ भी नहीं है
न माँ की देख-रेख
न पिता का स्नेह
न भाई की परवाह
न मित्रों की चाह
वहाँ एक कृत्रिम उद्यान है
जिसके पेड़ इतने महान हैं
कि तुम न उनपर चढ़ सकते हो
न उनकी डालियां पर डाल सकते हो
झूला!
न वहाँ फूल कभी नये होते हैं
न पुराने
कुछ अगर वहाँ सुन्दर है तो
उतना ही जितना
तुम खरीद सको।
लौट आओ मेरे बच्चे
तुम्हारा घर तुम्हारी पहचान है
और तुम पूरी नींद यहीं सो सकते हो
जैसे पहले सोते थे
और जब घर लौटते थे
तो भूख से भरे होते थे।

मुझे नहीं लगता
कि तुम्हारी भूख सही सलामत है
यह भी नहीं लगता
कि तुम्हारी हंसी उसी तरह
यह भी नहीं लगता कि
कि तुम्हारा गुस्सा अभी मौलिक है
और यह भी नहीं लगता कि
कि तुम अपनी तरह हो
लौट आओ मेरे बच्चे
वे सब तुम्हारा
तुम्हारा होना बदल देंगे
और तुम्हें
उसी बगीचे का हिस्सा बना देंगे
जिसमें बसंत नहीं आता
सिर्फ ठहरा रहता है पतझर
थका और अधमरा।

सांड़ और दीवाली

आज मैं गाय के फेर में नहीं था
शहर में वैसे भी घास कम है
और पिछले दिनों से
लोगों ने अपने घरों के साथ-साथ
सड़कों के किनारे की भी घास
साफ करनी शुरू कर दी थी,
मुझे क्या पता थ कि दीवाली
आने वाली थी
इसलिए मैं अपने पेट के लिए
परेशान था,
काफी जद्दोजहद के बाद
कूड़े के ढेर के किनारे
कुछ जूठन खा पीकर
दिनभर के प्रयत्न के बाद
मैं थोड़ा अपने पेट से आश्वस्त
चुपचाप पड़ा था
कि मेरी आँखों के सामने
कुछ ज्यादा रोशनी होने लगी
कुछ लोग वहाँ भी दिये रख आये
मेरे कानों में भड़ाक-भड़ाक होने लगा,
मुझे लगा कुछ 'स्पेशल' है
मैं जब गाँव में था

तो मैंने ध्यान नहीं दिया था
जाने कैसे मैं शहर में आ गया
और शहर में दिवाली
उफ, यह तो आफत है
चारो ओर पटाखे, धमाके
मेरे कान बहरे होने लगे थे।
मेरी बगल में पड़ा कुत्ता
कभी-कभी उठकर दौड़ता था
जिधर से आवाज आती उधर
वह एक फुर्तीला दोस्त है,
मैं ठहरा साँड़
मनुष्यों की जाति में
दबंगों के लिए एक गाली
मेरे पल्ले नहीं पड़ती
दीवाली।

दाँत निकलवाने के बाद

दाँत निकलवाने के बाद
घंटे भर चुप रहने की सलाह,
चुप में जाना
कि आँखों, कानों
और अन्य इन्द्रियों में
कितनी शक्ति है
जो चुप रहने से संचित होती
लोगों के चेहरे
उनकी भाषा
शाम का आना
धीरे-धीरे गहराना
रात होना
कोई और नहीं है?
एक दृश्य है
जो चुप में उगी आँखों से
दर्शनीय है,
चुप होना शायद
अपने घर लौटना है
देह की माँ की गोद में
सिर रखकर सो जाना है।
चुप्पी हर आवाज को सुनती है
और हर अनकही कथा को

समझ लेती है
कहते हैं मौनी बाबा
कभी होते थे
मौन व्रतधारी
ईश्वर मौन में मिले न मिले
पर जीवन अपनी सम्पूर्णता में
मौन में मुखर हो जाता है।

क्या कोई करेगा ऐसा भी 'सुसाइड'

नहीं रह गई है यह धरती
अब रहने लायक
यह सोचकर यदि कोई आत्महत्या करता तो
पुण्य का काम होता,
आत्महत्या वे लोग कर रहे हैं
जिन्हें नहीं मिला अपने अनाज का
यथोचित मूल्य,
नहीं मिली नौकरी
नहीं हुआ मुनाफा
नहीं हुए प्रतियोगिता परीक्षा में उत्तीर्ण
नहीं मिला अभीष्ट प्रेम का आलम्बन
या नहीं रह गया अच्छा स्वास्थ्य
नहीं मिला सम्मान
जिसका हकदार होने का दंभ पाले हैं
सब व्यक्तिगत कारणों से
आत्महत्या कर रहे हैं,
क्या कोई ऐसा भी मिलेगा
जो सार्वजनिक दुःख के चलते
आत्महत्या करेगा?

हिन्दी दिवस

हिन्दी के लिए
बड़े सबेरे
फिर-दुःखी हुए
बटुक नाथ तिवारी
आज 14 सितम्बर था
पिछले पचीस साल से
वाभन स्कूल में करते हैं
हिन्दी की सवारी।
बोल रहे अंग्रेजी लोग
तो उनका गुस्सा फूटता
हिन्दी में सोचते-विचारते
वे किसी जगह नहीं पहुँच पाये जब
तो अंग्रेजी को गरियाते
देश के नेताओं को कोसते
हर हिन्दी दिवस पर
हिन्दी के पक्ष में तर्क देते,
अब बहुत बूढ़े हो गये हैं
हिन्दी के लिए
हग मूत मारे हैं
बटुक नाथ तिवारी
पर हिन्दी का बैल
उठ नहीं पा रहा है
और अंग्रेजी का घोड़ा
सरपट दौड़ रहा है।

छोटी-छोटी बातें

छोटी-छोटी बातें
छोटे-छोटे विचार
छोटे-छोटे भाव
छोटे-छोटे अभाव
जीवन बीत जाता है।
जिसे हम बड़ा कहते हैं
वह एक स्वप्न है
वह अधूरा रहता है
जीवन छोटी-छोटी चीजों से
चलता रहता है।

सत्य

वहाँ सत्य लुढ़का हुआ था
एक कोने में
लोटे सा
मैंने उसे उठाया
उसमें जलभरा
अक्षत डाला
सुपारी डाली
एक पैसा
आम का पल्लव
उसपर दिये में चावल भर रखा
उसपर दीपक घी का जलाया
सत्य को प्रवाहित किया,
कहीं वह लुढ़का था
हिंसा में, जयनाद में
मैंने उसे मस्जिद में
पहुँचाया
उसे कुरान की आयतें दीं
आकाश के नीचे
घुटने टेककर
रहम की इबादत मांगने की
कला सिखाई
और वह शान्त होकर लौटा,

सत्य यहाँ-वहाँ भटक रहा था
गुरुद्वारे में ले गया
सबद कीर्त्तन सुनाया
सेवा का पाठ पढ़ने को दिया
सत्य के लिए ही
मैंने संतों से
फकीरों से
महापुरुषों से भेंट की
लोगों की भेंट भी कराया
सत्य को अपनी समझ से ईश्वर बनाया
शीश नवाया,
प्रेम और शांति की भीख मांगी।
अब सत्य की बारी थी
वह क्या कर रहा है
क्या करेगा
आप लोग देखें
मैं तो देख ही रहा हूँ।

बचपन में बहन की मृत्यु

बचपन की अनव्याही बहन
याद आती है
स्कूल से लौटा था
देखा आँगन में भीड़ थी
बहन को लगा दिया गया था चंदन का टीका
दरवाजे पर बढ़ई टिक्ठी तैय्यार कर रहा था
लोग लगातार-काम कर रहे थे
माँ रोये जा रही थी
पिता चुप थे
कि रोने से जैसा उनका
दुःख मर जायेगा।
मैं उदास से ज्यादा ही कुछ था
चुप और ठगा सा
मैं भी जाना चाहता था घाट
मुझे बरजा गया,
मेरी बहन को ले गये लोग
मैंने सुना था कि
लोगों ने उसे जला दिया।
कथा जब व्यथा में
बदलती है तो
आती है कविता
सन्न रह जाते हैं पाठक।

दुख को सुरती की तरह थूक दो

दुख को सुरती की तरह थूक दो
सुख का एक गिलास पानी पी लो
दुख के आँसुओं को बह जाने दो
सुख की मुस्कान ओठों पर रह जाने दो।
चलते हो तो पाँवों को चलने दो
रूकते हो तो मौत को रूक जाने दो।
दुर्गम पर्वत पर भी होते हैं पेड़
उनकी छाँवों में बैठ लेने दो।
झरने जो झर रहे झर-झर-झर
अंजिल में जल भर के पी लेने दो।
आते हैं ऐसे अनेक कष्ट कारक दृश्य
कर लो इंतजार बादलों को छँट जाने दो।
जो भी कार्य तुम्हारा ईश्वर प्रेरित
तुम बनो निमित्त उसे हो जाने दो।
फंसती रहती है नाँव भंवर में लेकिन
मांझी पर कर भरोसा तट आने दो।
आता है, अंहकार एक राक्षस सा
विजय के बाणों से उसे भर जाने दो।
न कुछ मिले तो संतोष तो है
उसे ही खजाना मान रख लेने दो।

जिन्होंने की रूसवाई अनेक बार
मिलें तो उनको भी मिल लेने दो।
बहुत जिये हो भाग-भागकर धरती पर
अब आई मौत खुद को मर जाने दो।

भाग्य में : आम आदमी के

भाग्य में कुछ नहीं लिखा था
जन्म के अलावा
वह हो गया
भाग्य में कुछ नहीं लिखा था
मृत्यु के अलावा
वह हो जायेगी
भाग्य में लिखी नहीं गयी थी लक्ष्मी
वह नहीं मिली
भाग्य में लिखी नहीं गई थी विद्या
वह नहीं मिली
भाग्य में नहीं गई थी
कोई सत्ता
उसके मिलने का सवाल न था
कोई रूप, रंग, सुन्दरता
बल पौरुष, ख्याति
नौकरी, खेती-बारी
कुछ नहीं लिखा था,
सिवाय अन्न खाने की भूख
सोने के लिए नींद,
जीने के लिए सांस
और जांगर पेरने के लिए थोड़ा सा बल
फिर भी मैं राष्ट्र को समर्पित हूँ

क्योंकि मेरे पास राष्ट्र को देने के लिए
यही है,
अब राष्ट्र पर है कि
कि वह मुझे क्या देता है
मैं स्पष्ट कर दूँ कि
मैं शिकायत नहीं कर रहा हूँ।

मेरा जैकेट

मेरा जैकेट मेरा
सुरक्षा कवच है
मेरी जीवन-रक्षक दवाइयों की तरह
मेरे पैसों, रुपयों
मेरा आइडेंटी कार्ड, आधारकार्ड
पैनकार्ड
और मोबाइल, चश्मा
मुड़े-तुड़े स्मृतियों के सहेजने वाले
कागजों को सुरक्षित
रखने वाला
कई जेबों वाला मेरा
जाकेट
कुर्ते पर
भले ही भद्दा लगता हो
मेरी प्रेमिका को
पर मेरे लिए एक जरूरी चीज है
और जब प्रेमिका के लिए
स्मार्ट दिखने के चक्कर में
इस जैकेट को
गर्मी में भी नहीं उतारना चाहता
आप मुझे असली प्रेमी न कहें
न सही

पर मैं यदि ऐसा न करूँ
तो बहुत कुछ खो दूँगा
जैसे कि लौटने के लिए
बस, रिक्सा, आटो का किराया
अपना आधार कार्ड
और मित्रों के फीडेड मोबाइल नम्बर
क्योंकि मोबाइल के भी
ज्यादा दिन तक गायब न होने का कारण
मेरा जैकेट है,
वैसे भी दुनिया का हर आदमी
अपने जैकेट को अपने ढंग से
पहने है, वह अदृश्य हो सकता है,
पर हर सुरक्षा
एक जैकेट है
चाहे वह झोले के रूप में
कंधे से लटके
या बड़े आदमी के पी0ए0 की तरह
आखिर जैकेट
हर कोई पहने है,
स्त्रियाँ तो पर्स लिए ही रहती हैं
न लिए हों पर्स
तो अपने ब्लाउज को ही
जैकेट मान लेती हैं
जहाँ रखे रहती हैं
पैसे या छोटा मोबाइल,
घर भी जैकेट है
रेल का डब्बा भी
देह तो सबसे बड़ा जैकेट है
जिसमें प्राण सुरक्षित है,

जैसे खोपड़ी में दिमाग
और दिमाग के भीतर
जीवन-चेता अदृश्य जल।
मैं जैकेट को प्रणाम करता हूँ
अंततः यह दुनिया भी तो एक जैकेट है
और मनुष्य को देना चाहता हूँ
धन्यवाद
जिसकी एक जाति
दर्जी है,
उस मनुष्य को बहुत-बहुत धन्यवाद
जिसने जैकेट की कल्पना की
और उसे सिल दिया।
और हाँ उस ईश्वर को धन्यवाद
जो दुनिया का दर्जी है।

बाढ़ में मंत्री

मंत्री का काम है बजट एलाट कर देना
उसने कर भी दिया
उसने और मुख्यमंत्री ने
हवाई सर्वेक्षण कर लिया
मुख्य सचिव ने मौतों का आंकड़ा पेश कर दिया है
जिलों के कलेक्टर
अपनी ड्यूटी पर हैं
और नावें, स्टीमर, गोताखोर
आयात कर लिये गये हैं
आपदा-प्रबन्धन का काम जारी है,
मीडिया फोटो लेकर चैनल पर
दिखा रही है
सुरक्षित नगर-वासी
बाढ़-पीड़ितों की दशा का फोटो ले रहे हैं,
कुछ लोग कुछ खाने का सामान बाँट रहे हैं
और सेल्फी ले रहे हैं
किस्सा-कोताह
बाढ़ आ गई है
और सरकार एवं अफसर
बनिये और अन्नदाता
अखबार और चैनल
सब अपना काम कर रहे हैं

नेता बयान जारी करके
जनता को आश्वासन देने के बाद
हेलीकाप्टर से
उड़ जाता है।

दीपावली

अँधेरा भीतर है
बाहर दिये जल रहे हैं
कहा गया है अनेक बार
सुना कभी नहीं गया।
हर कही गई अच्छी बात
कभी नहीं सुनी गई है
कविता में कही गई बात
और नहीं सुनी जाती।
हाँ दिये छन्द की तरह रोशनी करते हैं
लोग दिये रखते हैं, रोशन करते हैं
गीत गाते हैं, छन्द में रस पाते हैं
पर यह तात्कालिक उन्माद होता है
दिये के स्नेह
बाती का त्याग
और दीपक की महत्ता
किसी चित्त में नहीं समाती
हर साल दीवाली आती है
चली जाती है।

बुढ़िया के मरने की प्रतीक्षा

बुढ़िया को देखकर सभी को लगने लगा है
बुढ़िया अब मरेगी
बुढ़िया का मुँह खुला का खुला रह जाता है
वह नींद में है कि अंतिम निद्रा में
बीच-बीच में भ्रम हो जाता है
वह उठ नहीं सकती
उसकी बहुएँ, उसके बेटे, नाती-पोतों का
बारी-बारी, दवा या भोजन के नाम पर कह देना
महीनों से लगा है
घर वाले ईश्वर के भक्त हो गये हैं
ईश्वर अब बुढ़िया को उठा ले
गोया वे ईश्वर पर पूरा भरोसा करते हों
इतना भरोसा उनका अन्य मामलों में
ईश्वर पर
कभी नहीं था,
कोई सयानी औरत आती है
बुढ़िया के कान शिथिल हो गये हैं
कोइ कहता है कि बुढ़िया की सांस
अब नाभि से नहीं आ रही है।
लक्षण ठीक नहीं है
गोया लक्षण का ठीक न होना
ठीक लक्षण है घर वालों के लिए।

बहुत दिनों बाद मिलने पर

उसकी आँखों में कुछ नहीं बचा था
न प्रेम, न एहसास, न दण्ड
न क्षमा, न क्रोध
न पाप, न पुण्य
वह पत्थर की तरह
लुढ़की हुई आई
और मिलने के बाद
वहीं पड़ी रही
विदा भी नहीं करने आई।

एक और दीपावली

लोग कहते हैं कि दिये से रोशनी होती है
मैं कहता हूँ कि वह मुस्कराता है
दिये जलते हैं,
उसका होना दीवाली का आना है नित्य
उसका कभी न होना
हमेशा के लिए अमावश का घिर जाना होगा,
मैं रहूँगा देखने के लिए तो
और नहीं रहूँगा तो जो देख सकेंगे
वे मेरा करेंगे विश्वास।
दीपावली केवल प्रेम से पैदा होती है
और प्रेम के खत्म होने पर
अमावस्या की रात घनीभूत हो जाती है।

मिल गईं मुझे एक साथ कई डायरियाँ

पहली डायरी

जनतंत्र की डायरी में लिखा मिला
चुनावतंत्र
पैसा
जाति और धर्म
जिताऊ कैंडीडेट
विरोधियों की काट
अपनी स्तुति
दूसरों की निन्दा,
गरीबों को प्रलोभन
वोट के लिए घोषणा
जीतना और सरकार बनाना
फिर पाँच साल तक
रणनीति बनाना
कि फिर कैसे सत्ता वापस मिले
जनता का नाम
नेता को सम्पूर्ण अमृतफल।

प्रेमिका की डायरी

मैं समझता था कि
सिर्फ मेरे बारे में लिखा होगा
उसमें
पर उसमें तो कई के नाम पते

लिखे थे
फोन नम्बर
और ऐसी बातें
जिससे पता चलता था कि
वह मुझे भ्रम में डाले थी
वह बहुतों से करती थी
प्यार
और जताती थी कि
उसे केवल मुझसे है प्यार।

पत्नी की डायरी में

पत्नी के डायरी में
मैं गायब था
मेरे बच्चे थे
उसकी शिकायतें थीं
खरा न उतरने की
झल्लाहट थी,
और उसने क्या-क्या किया
मेरे लिए
मेरे दास्तों के लिए
मेरे परिवार के लिए
सब ब्यौरा दर्ज था
मैंने कुछ नहीं किया उसके लिए
यहाँ तक कि प्यार भी
इसका बार-बार जिक्र था

नौकर की डायरी

मुझसे ज्यादा कमीना आदमी
उसके लिए कोई नहीं था
वह महज पैसों के लिए
मुझे महान मानता था,

और अपनी जरूरतों के लिए
ए.टी.एम. मशीन
वह अगले जन्म की प्रतीक्षा में
था
कि कब वह मेरा मालिक
बन जायेगा।

साक्षी होकर रह जाँय

छोड़ते जाना है सबकुछ
धीरे-धीरे
विद्या-बुद्धि, बल पौरुष
अर्थ, धर्म, काम
यहाँ तक कि मोक्ष
क्योंकि छोड़ते जाने से
हम छोड़ रहे हैं
इसका सुख मिलेगा,
वर्ना छूटता तो है ही
मेधा, स्मृति
वाग्मिता
रचना, सृजनधर्मिता
प्यार और आकांक्षा
सब छूटना है
देह के पहले,
यहाँ तक कि ईश्वर को भी
छोड़ देना है
कि वह भी एक सहारा है
और अपना नहीं है,
तो छूटे, छूट जाय सबकुछ
हम साक्षी होकर रह जाँय।

पूर्णता के विषय में

अपनी पूछ से कितनी जगह बना सकेंगे
दुनिया में
एक कुत्ते ने दूसरे कुत्ते से पूछा
कोई उत्तर दूसरे ने नहीं दिया
स्वाभिमान में खड़े गदहों को देखकर
बैल ने कहा
खाक़ स्वाभिमान है
मूर्खता में खड़े रहते हैं गदहे
कीड़ों ने पक्षियों को देखकर
सोचा
काश पंख होते
तो कुचले नहीं जाते
केचुए अभी भी अपनी
रीढ के लिए
लगातार लोकतांत्रिक ढंग से
संघर्ष कर रहे हैं
नीला आसमान कभी-कभी होता है
साफ और नीला
और कभी-कभी ही
उगता है चाँद सम्पूर्ण
बेहद नरम-रश्मि और
चमकीला।

चैत कथन

पेड़ों ने बुलाया
मेरे पास आओ
पक्षी तो आते
तुम नहीं आते
मानव की जाति हो
कुछ कर पछताते हो
तुमने मुझे काटा था
फिर भी मैं डालों संग
झुक-झुक कर गाता था
मेरी इस चुप्पी के गीतों को गाओ
मेरे पास आओ।
पेड़ों का कहना था
मुझे केवल सुनना था
वक्त कुछ कटना था।
लो फिर से समय हुआ
रोटी कमाने का
ड्यूटी पर जाने का
पेड़ वहीं खड़े थे
थोड़ी सी बात हुई
फिर हम लौट आये
इसी तरह सुबह-शाम
हमने बिताये।

तारीख दे दो

मेरे मन में
एक आलसी न्यायालय है
जब समस्याओं के अनेक
मुकदमे पेश आते हैं
तो कुछ का ही कर पाता फैसला
बाकी को तारीख दे देता हूँ
तारीख देते-देते
मैंने प्यार को भी
तारीख दे दी,
गो दिया तो इस जनम का ही
पर लगता है
अगले जनम में तारीख का मौका मिलेगा,
मैंने ईश्वर को भी तारीख दे दी
कि अब इस जनम में
नहीं होनी है आपसे भेंट
देते रहिए जनम पर जनम
मुझे तो इसी दुनिया में
मजा आ रहा है
बैकुंठ में जाकर करूगा क्या
न दोस्त होंगे
न दुश्मन
तो वैकुंठ लेकर क्या करूंगा,

चाहता जरूर था
दुनिया भर के माता-पिताओं से
कि वे अपने बच्चे को भी
इतनी छूट दें कि
कई जनमों में सुधरें
पर बच्चों की, कवियों की कौन सुनता है
जैसे कि अभी तक कहाँ सुनी गईं
महिलाएँ, दुनिया की किसी भी अदालत में
पूरी की पूरी।

वृद्ध की मृत्यु के बाद

घर को रंग दिया गया
साफ किया गया
दो दिनों बाद तेरही है
बूढ़ा अशक्त जबतक था
उसका लड़का
बहू परेशान थे,
वह खुद भी बिस्तर पर
टट्टी पेशाब करके
परेशान था
मृत्यु ने सबकी परेशानी
खत्म कर दी,
अब लड़के को
इलाज के लिए
न पैसों का इंतजाम करना था
न उसे बूढ़े बाप के लिए
अतिरिक्त समय देना था,
मृत्यु एक सफाई की देवी है
जो घरों से
कचरे भी साफ करती है
दयालु है
हाँ जब वह असमय आती है
तो उसके प्रति वितृष्णा
और धिक्कार भी पैदा होता है।

कविता में व्याकरण

टहलना जरूरी है
टहलाना भी ठीक ही है
पर टहला देना
अच्छी क्रिया नहीं है
वे सबको टहला रहे हैं।
फुसलाना सिर्फ बच्चों के सन्दर्भ में
ठीक लग सकता है
नवजवानों के विषय में
तो बिल्कुल ठीक नहीं है,
औरतों को फुसलाना
गैर मुनासिब क्रिया है
यदि वह अपनी औरत के अलावा
किसी अन्य औरत से सन्दर्भित है,
मैं क्रियाओं में कर्म
और कर्म में
कर्त्ता की तलाश कर रहा हूँ
व्याकरण नहीं पढ़ रहा हूँ
यह बताना जरूरी है
और यह भी जरूरी है
मैं आदमियों के
बारे में कुछ कह रहा हूँ।

एक ग़ज़ल

मैं जो चुप हूँ तो शाम भी चुप है
तुम जो चुप हो तो जमाना चुप है
हवा कैसी बही जा रही है यारों
कोई घर में तो कोई बाहर चुप है।
किसी के साथ दिन बिताने पर
याद करने पर दिल बहुत चुप है
यह जो चुप्पी है इसे क्या कहिए
पेड़, चुप हैं, समन्दर चुप हैं।
एक ही बोलता और बोलता रहता
ओर ये मुल्क चुप है जमाना चुप हैं।
कहाँ तक अर्ज करें क्या बोलें।
कोई सूरत नहीं सभी चुप हैं।

गैरबराबरी

गली के कुत्ते भी
अमीर-गरीब में भेद करते हैं
लक-दक कपड़ों में निकले लोगों पर
केवल पालतू कुत्ते भौंकते हैं
सामान्य कुत्ते कूड़ा बीनने वाली औरतों
गँदले आदमियों को देखते ही
भूकते हैं,
लक्ष्मी की कृपा है
अमीरों पर
कुत्तों की भी
गरीबों पर कुत्ते भी दया नहीं करते
सरकार क्या करेगी?
हमारे समय में तो यही है
पिछले समयों में क्या रहा होगा
इसका इतिहास नहीं मिलता।

शाम की उदासी

शाम की उदासी तो
अन्तहीन रातों की तरह है
जिसका सिरा नहीं मिलता
घुटने में माथ डालकर
उन उदासियों से पीछा छुड़ाने की कोशिशें
नाकामयाब हैं।
सितारे आसमान में चमकते हैं
आदमी धरती पर बुझ जाता है
दिये जलते हैं,
पर वे आसपास का अंधकार
इतना दूर नहीं कर पाते कि
आदमी की उदासियों का अंधेरा भी
मिट जाये।
सूर्य हमेशा दूसरे दिन उगता है
फिलहाल शाम को तो अस्त ही होता है।

आज की बड़ी कविता

कहाँ लिखी जा सकी वह कविता
कि एक डाल पर हरे-हरे रंग की
पत्तियाँ निकल आयें,
कहाँ से लाये गये शब्द
कि सुबह की चिड़िया के बोल
वे बन सकें,
कहाँ किस बाङ्मय के कारखाने में
मिला वह सौरभ
कि एक गुलाब
अपनी सुगन्ध से
श्वासों को तृप्ति दे सके।
कहाँ मिले हैं शब्द किसी कवि को
जो मजबूर गरीब को
पेट भर भोजन दे सके
कोई बैंक नहीं कविता की किताबों में
जहाँ से कोई किसान अपनी
जरूरी बीमारी की दवा खरीद सके,
ऐसा लगता है कि
कविता के शब्द
सिर्फ रचनाकार को शोहरत
और सम्पदा देकर
हमेशा के लिए

या समय-समय पर
प्रकट होने का आश्वासन देकर
अन्तर्धान हो जाते हैं
ठीक ईश्वर की तरह
जो अति अन्याय होने पर
अवतरित होता है,
शब्दों को बीच में बचते आदमी
और उसके दारूण इतिहास का
कभी कुछ पता नहीं रहता।
थोड़ा लिखना बहुत समझना
शायद आज की बड़ी कविता है।

कुम्हड़ा एक निरीह प्राणी की तरह है

सुबह-सुबह एक बड़े कुम्हड़े पर दृष्टि गई,
मैंने सोचा यह तभी तक बचा है
जबतक वह आदमी के हाथ में न आये
चाकू के जद से बाहर है,
कल एक पहाड़ी स्थान के होटल में
मुर्गे टहल रहे थे, बकरे भी
मैंने सोचा, ये भी तभी तक बचे हैं
जबतक आदमी के जद के बाहर हैं,
पेड़ों का बचना तो विकास के जद से बाहर होने पर निर्भर है,
बच्चों की आंखों पर चश्मा चढ़ना लाजिमी है,
क्योंकि उन्हें पढ़ना है, कुछ बनना है, कुछ कर दिखाना है,
नदी में पत्थर तभी तक हैं
जबतक आदमी उसे उठा न लाये
आदमी की जद में दुनिया कबतक बचेगी
आखिर उसको आना ही है उसके जद में
एक न एक दिन,
ईश्वर बनाया करे इस दुनिया को
पर जीने और मरने का काम खुद उसका है
और समय के पहले किसी को मार सकता है आदमी
मुझे आदमी सांप और शेर

जंगली सूअर, गिद्धों और खतरनाक
विषों से ज्यादा मारक लगता है,
वह अपने स्वार्थ में किसी को खत्म कर सकता है
कुम्हड़ा तो एक निरीह प्राणी की तरह है।

सदी का दरवाजा खुल गया

कुत्तों को दौड़ते देखने की आदत है
सुबह कुछ कुत्ते
यों ही सोये मिल जाते हैं
आज एक कुत्ता ऐसा लेटा मिला घूर पर
कि उसकी आँखें
बहुत अलग से बिम्बधर्मिणी कविता
की तरह लग रहीं थीं,
मैंने सोचा मैं पतित हो रहा हूँ
आदमी को छोड़कर
कुत्तों के बारे में बात कर रहा हूँ
पर क्या करूँ दोस्त।
कुत्ता होने के बाद ही मुझे मिली थी
सरकारी नौकरी
अब आप ही बताओ कि
मैं किस आदमी की बात करूँ
कुत्ता एक सर्वश्रेष्ठ जानवर है,
मैंने कहा
और इक्कीसवीं सदी का
दरवाजा मेरे लिए खुल गया।

आदमी निरुत्तर है

एक फूल खिला है
परमात्मा सुन्दर है
एक विकलांग मिला है
परमात्मा असुन्दर है।
कह पाना कुछ भी कठिन है
जीना असम्भव है
मरने की तरह मुश्किल नहीं
इसलिए ईश्वर उत्तर है
प्रश्नों का आदमीं
निरुत्तर है।

रात आई है

और दिनों की तरह
दिन के बाद रात फिर आई है
कौन जानता है कि
सुबह हो, न हो
रात को जी रहा हूँ
रात को लिख रहा हूँ
रात को भोग रहा हूँ
रात शायद मेरा ही भोग
कर रही है,
रात में रात
रात की तरह
नींद में जाने के पहले
रात
एक हकीकत है
जिसका मुकाबला
कर रहा हूँ
सोच रहा हूँ
चाँद, तारों, समुद्रों
बियाबानों
शहरों, कस्बों
गाँवों
नदियों, नालों

जनमते, मरते
हत, हत्यारों
आलम्बन, आश्रय
जो हैं उनके बारे में
रात
कितनी
निर्वचनीयता
पैदा कर रही है।

मैं भी एक पिल्ला हूँ

क्वार कातिक में
बीजारोपित
कुत्तों की पौध
मुहल्ले की गली में
आ गये हैं
अब वे राम के वनवास की
अवधि तक
रहेंगे
अगर वे मनुष्यों के वाहनों
बीमारियों से बच गये,
मैं भी तो तिहत्तर साल का
एक पिल्ला हूँ
फर्क इतना है कि उन्हें
केवल भोजन खोजना है,
मुझे वस्त्र, घर, दवाई
और कुछ और-और
उनका भविष्य लगभग तय है
मेरा भविष्य तय नहीं है
पर
मर जाना दोनों की मंजिल है।

अमृत और भूख

बहुत मन से खा रही है
घर में झाड़ू-पोछा करने वाली
लड़की
आज मालिक के घर में
मुण्डन-संस्कार सम्पन्न हुआ है
और उसके हिस्से की पूड़ी
उसके हिस्से की पनीर
रायता और खीर
उसके लिए रखा हुआ था।
वह एक-एक कौर
अमृत पीने की तरह गटक रही है
भूख का नाम ही है अमृत
वैसे यह पर्याय नहीं है व्याकरण में
पर कविता में है
जब लड़की दुबली-पतली
पूड़ी और खीर
पनीर और रायता
दो तरह की सब्जियाँ
आज कई दिनों बाद
खा रही है।

मुहावरे में

मुहावरे में दिन कट रहे हैं
मुहावरे में सब ठीक है
मुहावरे में तबियत ठीक है
मुहावरे में बाल-बच्चे मज़े में हैं
मुहावरे में आपने फ़ोन किया
मुहावरे में मैंने कहा-सब ठीक है न?
मुहावरे में आपने कहा कि
आपका आशीर्वाद या स्नेह
मुहावरे में आपने बुलाया
कब आएँगे, मुहावरे में आपने पूछा
मुहावरे में मैंने कहा, जल्दी भेंट होगी
यह मुहावरा हमारे सभ्य समय का
एक ऐसा मुहावरा है
जो हमारे भद्रलोक में
ऐसे चलता है जैसे
सरकारी सिक्का बाजार में
चलता है,
मुहावरे हैं,
उनके पीछे भी भाषा
कब मुहावरा बन जाएगी,
सोचकर मन बेचैन हो जाता है।

निर्विकल्प

पेश्तर इसके कि
यह दुनिया ख़त्म हो जाए
मैं चीखना चाहता हूँ
भाषा में अपनी साँस भरना चाहता हूँ
कि यह भाषा
वायु में मिल जाए
और पूरे पृथ्वी-मण्डल में भर जाए
कि यह भाषा
दुनिया के भीतर की आत्मा
ख़त्म न होने दे,
गो, हर जीव के जन्म के साथ
मरण तय है
पर जैसे पुरखे मरने के पहले
हमारे भीतर एक आत्मा छोड़ गए थे
भाषा के द्वारा
वैसे ही अपनी चीख़ से
मरने के पहले
दुनिया के वर्तमान
और भविष्य में उस भाषा को
छोड़ जाना चाहता हूँ
मैं उसे जिन्दा रखने के लिए
जोर-जोर से चीख रहा हूँ

ऐसी चीख़, जिसमें कोई
हिंसा या ध्वनि-प्रदूषण नहीं है
आप विश्वास करें
मैं कविता नहीं लिख रहा हूँ
सिर्फ़ अपने रक्त की आख़िरी ताक़त से
आत्मा को नष्ट करने वाली शक्तियों से
लड़ रहा हूँ
लड़ना और कविता में भी होना
एक विचित्र विरोधाभास है
पर क्या करूँ
एक कवि होने के नाते
और कोई विकल्प मेरे पास नहीं है।

सफल लोगों के प्रति असफल वक्तव्य

तुम सोचते हो
कि तुमने पा लिया
वहसमय
जो ऐसे छू रहा है
जैसे कि तुम्हारा नन्हा-सा बच्चा
जिसकी उँगलियों में
तुम्हारे भविष्य की अँगूठी
सोने में बनकर चमकनेवाली है
तुम सोचते हो तुम्हारे पाँवों की धरती
अब तुम्हारे पाँवों के नीचे
एक कालीन हो गई है
और तुम उस पर
सुख से चल सकते हो
या वहीं कोई कुर्सी लगाकर
बैठ सकते हो
मित्रों से हास-परिहास करते हुए
अपने पसंद के भोजन
और भोग की चर्चा करते
तुम सोचते हो कि
आज जो तुम्हारे शीश पर
आकाश है
तुम्हें उड़ने का 'स्पेस' देगा

और तुम उड़ सकते हो
साक्षात् वायुवाहन की तरह।
तुम्हारा जिंदा रहना
बहुत महत्वपूर्ण है
तुम सोचते हो....
इसके आगे कुछ नहीं कहूँगा
क्योंकि कहना और सुनना
दोनों नामुमकिन है।
हाँ, यहाँ से और अभी
तुम्हारे शब्दों से अपने शब्दों को
अलग करना होगा
क्योंकि मेरे-जैसे असफल लोगों के पास
और भी चुनौतियाँ हैं
जिन्हें तुम्हारे-जैसे सफल लोगों के बिना
झेलना है और उनका सामना करना है।

सावधान बच्चों!

सावधान बच्चों!
पहने रहो अपनी आँखें
कहीं वे गिर न जाएँ
नाक
कि वह बह न जाए
सिर
कि वह धड़ से अलग
न हो जाए
पहने रहो अपेन हाथ-पाँव,
विभिन्न अंग
कि कहीं वे अलग न हो जाएँ,
असल में मैंने बड़ी उम्र में जाना दुनिया का मन
कि वह
अलग करने में बहुत रुचि रखती है
जोड़ने से ज़्यादा,
मेरे भविष्य मेरे बच्चों
तुम्हें सावधान करना मेरा कर्तव्य है।

डर

जीने में मरने का डर
बीमारी का डर
बाल-बच्चों के बारे में
दोस्तों, प्रियजनों के बारे में
दुनिया के बारे मं
सब अनिष्ट संभावनाओं के डर से
जब-जब व्याकुल हुआ
तो भागा
ज़िन्दगी की गलियों में
खेलते-कूदते बच्चे मिले
जवान चमकदार हँसीवाली औरतें दिखीं,
दिखे बूढ़े बीड़ी पीते,
खैनी खाते,
मिले नवजवान सिनेमा का गाना गाते
मिली अल्हड़ लड़कियाँ
जो सौन्दर्य और यौवन को
चरम प्रतिपाद्य मानती हैं,
मेरा डर कुछ कम हुआ
ज़िन्दगी का जल थोड़ा छलका
थोड़े हरे-भरे लगे रास्ते के पेड़,
थोड़ी ज़्यादा उत्सुक-प्रसन्न लगी
मिल गई चिड़ियाँ।

कुछ ज़्यादा ही भले लगे
आवारा कुत्ते,
लौट आया घर
पोता पूछता है, बाबा!
रात को फिर कहीं न आएगा
भूकंप?

आने वाले समय में चिन्ता का विषय

कभी-कभी लगता है कि
कोई कष्ट नहीं है
और तब बड़ी बेचैनी होती है
कैसे हैं लोग
जो बिना दुःख के जीते हैं
वे जीवित लोग है
सोच कर हैरत होती है।
दुःख तो हर वक्त रहता है
अपना न सही
दूसरों का
क्योंकि सर्वत्र सुख दुर्लभ है
और ऐसा आदमी भी दुर्लभ है,
जो जीवित हो और सर्वथा सुखी हो,
मेरे जमाने में
कुछ ऐसे लोग होने लगे हैं
आने वाले समय के लिए
यही चिन्ता का विषय है।

अच्छी कविता

एक समय में
अच्छी कविता
एक सुन्दर
और खुद्दार स्त्री की तरह होती है
जिसके साथ अच्छा सलूक भी
चाहिए,
सिर्फ कविता के अच्छी होने से
बात नहीं बनती
उसके पाठ की भी तमीज चाहिए
जैसे वायलिन या गिटार
तबला या हारमोनियम
उजड्डों के लिए नहीं है,
कि वे उसे रखने और उठाने की
बदतमीज हरकतों से
उसकी ऐसी-तैसी कर दें
कविता हर युग में
एक तरह की गीता है
यह नजर रखनी पड़ती है कि
उसका कैसा भाष्य किया जा रहा है,
हर वक्त मौजूद ईश्वर की तरह
कविता अपने भक्तों के
भावों पर भी निर्भर है

मजबूरी है कवि के लिए
कविता के पिता के लिए
कि उसकी कन्या
अच्छे घर में जाय
और सलीके से पढ़ी जाय।

शाम

देखो-देखो
शाम घिरते ही
कैसे उदासी बड़े-बड़े
डैने फैलाये इधर ही
आ रही है
शक्तिशालिनी चिड़िया की तरह
चुपचाप
अंधकार में उसकी उड़ने की आवाज
सुनाई पड़ रही है
डर, अवसाद
और सिमटन से
ठंडे पड़ते जा रहे हैं
व्यक्तित्व के शिखर
क्या करें इस चिड़िया का
जो रोज़ आती है
और कपाट बंद होने के
बावजूद
हमारे घरों में
डेरा डाल देती है।

कार में करैली

भद्र लोग जिसे करेला कहते हैं
भोजपुरी के लोग उसी को करैली
कार में करैली
सुनते ही आपका माथा ठनका होगा
पर यह सच है
गोरखपुर कैण्ट थाने के सामने
एक बड़ी पुरानी टूटी कार
जो पकड़ी गई होगी
बरसों से मिट्टी में धँसी पड़ी है
जिसके अंग ज्यादातर उखाड़ लिये गये हैं
जिसे चोरों ने नहीं उखाड़ा
वह ढाँचा ज़मीन में वहाँ धँसा है
उसके अन्दर करैली का एक
पेड़ उग आया है
बेहद हरी इसकी पत्तियाँ हैं
और अब उसमें फूल भी निकल आये हैं
एक दो फूलों में फल भी
मैं आते-आते देखता हूँ
मेरे दिमाग में आता है कि
जब यह कार चमचमाती
कभी सड़क पर दौड़ती रही होगी
और उस समय यह करैली का लता

यदि उसमें अचानक उग आती
तो कार का ड्राइवर
या मालिक
या दूसरे सवार अवश्य
इसको 'भूत' समझकर
भाग जाते।
अब तो न कार के मालिक का पता है
न ड्राइवर का
न करैली की लताओं को पता है
कि वे किस मशीनी पेड़ पर
पसर रहीं हैं
मैंने सोचा
कि परमात्मा का बनाया शरीर
यदि मरने के बाद सड़ता नहीं
और कहीं यों ही छोड़ दिया जाता
तो न सही करैली
किसी भी लता को उसपर
उगने और फैलने
फूलने और फलने का
मौका लगता
और यदि वह पुलिस थाने के सामने न होता
गाँव के बाग या सिवान पर होता
तो छोटे बच्चे उसपर अक्सर चढ़कर खेलते,
यह करैली की लता
इतनी हरी-भरी है कि
मैं अपने को एक पुरानी कार की तरह
कल्पित कर रहा हूँ
और चाहता हूँ कि
दुनिया मेरे भीतर से इसी तरह उपजे

मेरे न रहने पर।
हाँ, यह मेरी इच्छा जरूर है कि
कि मैं किसी थाने के सामने न रहूँ
ओर इस बदहाल ढाँचे की तरह
मेरा शरीर न रहे,
वह सूक्ष्म हो जाय
इतना कि वह किसी की पकड़ में न आये
सिवाय हरी-भरी लताओं
और चलते-फिरते जीवों के।

शानदार आदमी

शान में आदमी
शान पर चढ़ा एक चाकू है
ज़िन्दगी की मशीन पर चढ़ा हुआ
जब वह होता है
तो सिर्फ चिनगारियाँ निकलती हैं
जिसमें इतना भी कण नहीं होता
एक चूल्हा जल जाय
एक रोटी पक जाय।
एक भूख मिट जाय।
शानदार आदमी के पास
चापलूस होते हैं
दूर-दूर तक किसी
मनुष्य के होने की
उसके पास
कोई गुंजाइश नहीं होता।

प्रतीक्षा

जूता पहने जाने की प्रतीक्षा में
सोफा बैठे जाने की
सायकिल सवार की प्रतीक्षा में
गाड़ी स्टार्ट होने की प्रतीक्षा में
नल जल देने की प्रतीक्षा में
पेड़ पास बुलाने की प्रतीक्षा में
बच्चा अपनी माँ की गोद की प्रतीक्षा में
नवजवान नवयुवती की प्रतीक्षा में
नवयुवती नवजवान की प्रतीक्षा में
भक्त भगवान की प्रतीक्षा में
प्रतीक्षा, प्रतीक्षा, प्रतीक्षा
यह शब्द आकाश की तरह
समुद्र की तरह
हवा की तरह
पानी की तरह
सांसों की आवाज की तरह
धमनियों की शिराओं की तरह
शिराओं में
दौड़ते रक्त की तरह
एक अव्यक्त नाद की तरह
गूँजते स्वरों की तरह
निरंतर, निरंतर, निरंतर

प्रतीक्षा के कारण
कोई बीमार
कोई बेकार
कोई सफल
कोई असफल
कोई 'साधू' कोई 'संडासी'
कोई भिखारी, कोई साहूकार
मैं प्रतीक्षा करने की जगह
सब जगह देख रहा हूँ
बेहदमृतप्राय मरीज भले ही
मृत्यु की प्रतीक्षा न कर रहा हो
घरवाले उसके मरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं
चेले गुरुओं के गुजरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं
और नेता कुर्सियों की प्रतीक्षा में,
इस प्रतीक्षा या इंतजार के चलते
जाने कितने शायरों ने
इश्क की शायरियाँ
दुनिया की किताबों में दर्ज कीं
कितनों ने इसे एक व्यर्थ शब्द कहा
इसका अर्थ हमारे समय में
झपट्टा मारकर
या तो पाना है
या खत्म हो जाना है
पर है यह पद बहुत दिलचस्प
शायद ज़िन्दगी का
एक और पर्यायवाची
यह 'प्रतीक्षा' शब्द।

मैं गधा हूँ

मैं गदहा हूँ
मुझे परमात्मा ने
मैले कुचैले कपड़ों का गट्ठर
या मिट्टी ढोने के लिए
धोबी और कुम्हार के लिए पैदा किया
मैं स्वतंत्र रहने के लिए भी था
जबतक मैं इन दोनों प्रकार के मनुष्यों की
पकड़ में नहीं था,
तब तक गाँव, शहर के सिवानों
सड़कों पर
ऐसा विराजमान था
जैसे मैं आवश्यक जन्तु नहीं
कोई देवी-देवता हूँ
जिसकी चींपों-चीपों के बिना
यह पृथ्वी सूनी थी,
बहरहाल मुझे गाली देने के लिए
एक शब्द के रूप में चुना गया
मुझे नौकरों, मूर्खों
और आलसी मनुष्यों को
काव्य-बिम्ब देने के लिए भी
बार-बार चुना जाता रहा,
मैं गधा हूँ

अपने वजूद में
कुछ चरते हुए
कुछ आवश्यक करते हुए
अनावश्यक कहीं भी नहीं जाते हुए
चारो पैर ऊपर उठाकर
लोटते हुए
मुझे देखा जा सकता है,
मैं गधा हूँ।
आदमी के पुरुषार्थ का
कोई प्रतिमान न अंश में
न पूर्ण में
मुझसे नहीं चुना जाता,
न तो मैं फूल हूँ
न फल
न घोड़ा
न हाथी
कि रंगीनी और खुशबू
माधुर्य और सवारी
की सुगम-संभावना रहे,
पर ठीक है
कि मैं गधा हूँ
और मेरी आकांक्षाएँ
इतनी कम हैं कि
कम से कम
न तो कोई अहंकार है
न महत्वाकांक्षा
इस नाते सुखी हूँ
क्या आप भी मेरी तरह
सुखी रहना चाहते हैं?

यही जीवन है

कहाँ से आये
कहाँ जायेंगे
प्रश्न करने की नहीं है छूट
यही जीवन है।
क्यों हुए हैं, क्यों जिये हैं
क्यों किए हैं प्यार अनगिन बार
क्यों मरेंगे और मर कर क्या करेंगे
प्रश्न करने की नहीं है छूट
यही जीवन है।
यह नदी क्यों है
ये पर्वत कहाँ से
यह निरन्तर किए जाता जलधि हाहाकार
यह जलधि क्यों है
प्रश्न करने की नहीं है छूट
यही जीवन है।
उत्तरों के द्वार जब हो जाँय इतने बंद
किए प्रश्नों के लिए बस एक उत्तर मौन
मौन क्यों है, और यह आकाश क्यों है
प्रश्न करने की नहीं है छूट
यही जीवन है।

नमस्कार

शाम को टहल कर आया
तो नमस्कार मेरे इर्द-गिर्द
मेरे कुर्ते
पाजामे
मोजे
जूते
मेरी आँखों
मेरे कानों
सब कहीं चिपक गये थे,
गो, मैंने
लौटा दिया था तुरन्त
लोगों के नमस्कार
प्रणाम, आशीष के रूप में
पर नमस्कार
सरकार की तरह
मेरे ऊपर शासन कर रहा था,
मैंने आस-पास के पेड़ों को
बहुत बार नमस्कार
देकर
उनकी जड़ों में डाला
फिर भी कुछ न कुछ
बल्कि कहना चाहिए

ज्यादा से ज्यादा
वे मेरे ऊपर छाये रहे,
अब रात घिरने वाली है
नमस्कारों को अंधकार के समुद्र में
डाल रहा हूँ
कि आनन्दपूर्वक
भोजन कर सकूँ
और सो सकूँ।

अनन्त मिश्र

पिता : स्व. पंडित हरिहर मिश्र

माता : स्व. तीर्था देवी

जन्म : 18 अगस्त 1946 में ग्राम बेलेहे, जिला महाराजगंज, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा गाँव के परिवेश में। उस्का बाजार, सिद्धार्थ नगर जिले से हाईस्कूल। इंटरमीडिएट- सेंट एंड्रूज कॉलेज गोरखपुर से। बी. ए. और एम.ए. गोरखपुर विश्वविद्यालय से। 1967 में हिंदी से एम.ए.। तत्पश्चात गोरखपुर विश्वविद्यालय से पी.एच.डी.। पी.एच.डी. करते हुए ही पहले नौगढ़ (वर्तमान में सिद्धार्थनगर) डिग्री कॉलेज में अध्यापन। बाद में सेंट एंड्रूज डिग्री कॉलेज गोरखपुर में दो वर्ष तक हिंदी प्रवक्ता 1970 से गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन वहीं से 2010 में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में सेवा निवृत्त।

प्रकाशित काव्य संग्रह– एक शब्द उठाता हूँ, हमारे समय में, सभ्यता साधू के ठेंगे पर।

निबंध संग्रह– ये शब्द इसी जनपद के हैं।

आलोचना– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता।

सम्पर्क : नलिनी निवास, दाऊदपुर, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

: 9450441227

यश

यश पब्लिकेशंस, दिल्ली

1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा दिल्ली-32

कविता-संग्रह

ISBN 978-93-85696-34-3

www.yashpublications.co.in